

SMT. PARASSALA B PONNAMMAL

Smt. Parassala B Ponnammal, a renowned Carnatic Vocalist from Thiruvananthapuram In Kerala State, a performing artist and former Principal Of Government Music College, is the prime disciple of Padma Vibhushan, Sangeetha Kalanidhi, Rajya Seva Niratha, Dr, Semmangudi R Sreenivasa Iyer, the doyen of South Indian Carnatic Classical Music. Smt. Ponnammal is widely acknowledged for the pristine purity and subtle nuances in her rendering style which conforms to the true tradition of her Guru.

2. Born on November 29, 1924 in Parassala, (a small Town in Thiruvananthapuram District in Kerala State) as the third daughter of (late) Shri R. Mahadeva Iyer and (Late) Smt. A. Bhagavathy Ammal, Smt. Ponnammal got married in the year 1948 to Shri R. Devanayakam Iyer, a land lord. Smt. Ponnammal had her early lessons in classical music from Shri Paramu Pillai Bhagavathar, Followed by musical tranning from great maestros like Gayaka Sikhamani Harikesanallur Muthia Bhagavathar, Shri K.S. Narayanaswamy, Palshat Shri C.S. Krishna Iyer, Shri K.S. Harihara Bhagavathar, Shri K.R. Kumaraswamy Iyer and Shri M.A. Kalyanakrishna Bhagavathar.

3. During her musical career spanning 76 years, Smt. Ponnammal, an 'A Top' Artist in All India Radio and Doordarshan , has performed conventional classical concerts in India and abroad on various occasions in various venues which include the prestigious Music Academy and Adyar Kalakshetra in chennai; Shanmukhananda Fine Arts and Sangeetha Sabha in Bombay, Kalasagara in Secundarabad, Kuthiramalika and Navarathi Mandapam in Thiruvananthapuram; and Bhairavi Fine Arts, Cleveland and India Fine Arts Academy, San Diego in USA.

4. Smt. Ponnammal has also rendered for All India Redio, Thiruvananthapuram, the verses in the Bhakthi Manjari and Sree Padmanabha Shathaakam, two devotional poetic compositions in Sanskrit by His Highness Swathi Thirunal Maharaja; Sree Guruvayur Puresha Suprabhatham and Thrissive Puresha Suprabhatham,devotional poetic compositions in Sanskrit by Swami Jnananda Sarawathy and Gajendra Moksham a devotional script in Sanskrit taken from the epic Srimad Bhagavatham.

5. Smt. Ponnammal has so many 'Firsts' in the list of her achievements. Winning the Gold Medal at the age of 16 as the first female contestant in a competition held in connection with the birthday celebrations of Sree Chithira Thirunal Maharaja, the former King of erstwhile Travancore State, paved the way for her enrolment as the first female student in the Prestigious Swathi Thirunal College of Music, pioneered by the Royal Family of Travancore in Thirvananthapuram in the year 1940. Later, Smt. Ponnammal became the first female member of the teaching faculty in the same institution after passing Gayika and Gana Bhooshanam Courses with Distinction and First Rank respectively as the first girl student. Apart from being the first lady professor in the same institution Smt. Ponnammal served as the first lady Principal in the Government R L V College of Music and Fine Arts, Tripunithura in Ernakulam District of Kerala State during the period 1970 – 1980.

6. The so many 'Firsts' do not end here. Smt. Ponnammal has the unique privilege of being the first female artist to be invited to perform before the prestigious and Holy Sannidhanam of Lordess Saraswathy Devi in connection with the navarathi Music Festival organised by the Travancore Royal Family every year. The landmark event witnessing the intrusion of male bastion breaking the 180 years old tradition, happened in the year 2006 and Smt. Ponnammal has been rendering concerts there for eleven successive years since then.Now, even at the age of 92, Smt. Ponnammal is still continuing her service in the field of classical music as a performer and as a teacher and many of her disciples are well known performing artists.

7. Smt. Ponnammal is the recipient of a plethore of awards conferred on her by Central / State Government, Sangeetha Sabhas, Institutions, Temples, Trusts and other bodies. A few of them are, Lifetime achievement Award from Channai Fine Arts in the year 2015; Central Sangeetha Nataka Academy Award in the year 2009 presented by Smt. Pratibha Patil, the Hon'ble President of India; Swathi Puraskaram from the Government of Kerala in the years 2009; Kerala Sangeetha Nataka Academy Fellowship in the year 2002; Kerala Sangeetha Nataka Academy Award in the year 1977; Gayaka Ratnam Award from Shri Swathi Thirunal Sangeetha Sabha, Thiruvananthapuram in the year 1996; TTK Award from Chennai Music Academy in 2010; Chembai Guruvayurappan Puraskaram from Guruvayur Dewasvom in the year 2009; Sangeetha Kala sagaram from Kala Sagaram Sangeetha Sabha, Secundarabad in 2010; Samskrithy Award From Thunjan Smaraka Smaithi, Thiruvananthapuram in 2017; Sree Vedevyasa Ganamani from Guruji Sree Kasi Viswanathar, Vedavyasar Tapovanam in 2008.



श्रीमती पारशाला बी पोन्नम्माल

श्रीमती पारशाला बी पोन्नम्माल केरल राज्य के तिरूवनंतपुरम की रहने वाली एक जानी-मानी कर्नाटकी गायिका और एक अदाकारा कलाकार एवं राजकीय संगीत महाविद्यालय की पूर्व प्रिंसिपल हैं। आप संगीत कलानिधि, राज्य सेवा निरत, दक्षिण भारतीय कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत के डीन डॉ. सेमानगुडी आर श्रीनिवास अय्यर की प्रमुख शिष्या हैं। आपको व्यापक रूप से, आपके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली शैली, जो कि आपके गुरू की अनूठी परंपरा के समनुरूप है, में प्राचीन विशुद्धता एवं सूक्ष्म बारीकियों के लिए जाना जाता है।

2. आपका जन्म 29 नवंबर, 1924 को पारशाला (केरल राज्य के तिरूवतंतपुरम जिले के एक छोटे से नगर) में (स्व.) श्री आर. महादेव अय्यर एवं (स्व.) श्रीमती ए. भगवती अम्याल की तीसरी पुत्री के रूप में हुआ था। आपका विवाह वर्ष 1948 में एक जमींदार श्री आर.देवनायकम अय्यर के साथ हुआ था। आपने शास्त्रीय संगीत की अपनी शुरूआती शिक्षा श्री परामू पिल्लै भगवतार से ग्रहण की, इसके बाद आपने महान संगीत आचार्यों जैसे-गायक शिखामणि हरिकिसनल्लूर मुथिया भगवतार, श्री के.एस. नारायण स्वामी, पलशात श्री सी एस कृष्णा अय्यर, श्री के. एस. हरिहर भगवतार, श्री के.आर. कुमारस्वामी अय्यर तथा श्री एम.ए. कल्याण कृष्णा भगवतार से संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. आपके 76 वर्ष के दीर्घकालिक संगीत कॅरिअर के दौरान आपने आकशवाणी एवं दूरदर्शन की शीर्ष स्तर की कलाकार के रूप मे विभिन्न जगहों पर जिनमें चेन्नई स्थित प्रतिष्ठित संगीत अकादमी एवं आड्यार कलाक्षेत्र; मुंबई स्थित सन्मुखानन्द ललित कला एवं संगीत सभा, सिकन्दराबाद स्थित कलासागर, तिरूवनंतपुरम में कुटीरमलिका एवं नवराति मंडपम्; भैरवी ललित कला, क्लीवलैंड तथा यू एस ए स्थिति इंडिया फाइन आर्ट्स एकेडेमी, सैनडियागो में, विभिन्न अवसरों पर भारत तथा विदेश में पारंपरिक शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं।

4. आपने आकाशवाणी, तिरूवनंतपुरम के लिए भक्ति मंजरी एवं श्री पद्मनाभ शतकम की छन्दों, महामहिम स्वाति तिरूनाल महाराज द्वारा संस्कृत की दो भक्तिमय, गीतमय रचनाओं; श्री गुरूवायूर पुरेशा सुप्रभातम तथा त्रिशिव पुरेशा सुप्रभातम, स्वामी ज्ञानेन्द्र सरस्वती द्वारा संस्कृत में रची भक्तिमय गीतमय रचनाओं तथा श्रीमद् भागवद् महाकाव्य से ली गई संस्कृत की एक भक्तिमय कथा-गजेन्द्र मोक्षम् की प्रस्तुतियां भी दी हैं।

5. आपके द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों में से कई एक ऐसी हैं जो प्रथम बार किसी महिला को प्राप्त हुई हैं। श्रीचित्तिरा तिरूनाल महाराज, पूर्वत्रावणकोर राज्य के पूर्व राजा के जन्मदिन समारोहों के प्रसंग में आयोजित एक प्रतियोगिता में प्रथम महिला प्रतियोगी के रूप में 16 वर्ष की आयु में स्वर्ण पदक की जीत ने प्रतिष्ठित स्वाती तिरूमल संगीत महाविद्यालय में प्रथम महिला छात्र के रूप में आपके नामांकन का मार्ग प्रशस्त किया, जिसे तिरूवनंतपुरम में त्रावणकोर के शाही परिवार द्वारा वर्ष 1940 में स्थापित किया गया था। बाद में आप प्रथम महिला छात्र के रूप में विशेष योग्यता एवं प्रथम श्रेणी में गायिका एवं गाना भूषणम् पाठ्यक्रमों के उत्तीर्ण करने के बाद उसी संस्थान के शिक्षण फैकल्टी की प्रथम महिला सदस्य बनीं। उसी संस्थान में प्रथम महिला प्रोफेसर होने के अलावा आपने वर्ष 1970 से 1980 की अवधि के दौरान केरल राज्य के अर्णाकुलम जिले के राजकीय आर एल वी संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय, त्रिपुनितुरा में प्रथम महिला प्रिंसिपल के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं।

6. यह 'प्रथम बार' का सिलसिला यहीं समाप्त नहीं हुआ। आपको प्रत्येक वर्ष त्रावणकोर शाही परिवार द्वारा आयोजित नवरात्रि संगीत महोत्सव के संबंध में महादेवी सरस्वती देवी के प्रतिष्ठित एवं पवित्र 'सन्निधनम' के समक्ष प्रस्तुति देने के लिए प्रथम महिला कलाकार के रूप में आमंत्रित किये जाने का एक अनूठा विशेषाधिकार प्राप्त है। 180 वर्ष पुरानी परंपरा को ध्वस्त करते हुए पुरूष प्रधान गढ़ में सेंध लगाने की साक्षी यह यादगार घटना वर्ष 2006 में घटी और तब से आप लगातार 11 वर्षों से वहां संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही हैं। आज भी, 92 वर्ष की उम्र में आप एक अदाकारा एवं एक अध्यापिका के रूप में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सतत् रूप से अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं तथा आपके कई एक शिष्य सुप्रसिद्ध अदाकारी कलाकार हैं।

7. आपके खाते में केन्द्र/राज्य सरकार संगीत सभाओं, संस्थाओं, मंदिरों, न्यासों तथा अन्य निकायों द्वारा प्रदान किए गए पुरस्कारों का अम्बार है। इनमें से कुछेक अर्थात चेन्नई ललित कला द्वारा वर्ष 2015 में आजीवन उपलब्धता पुरस्कार; भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील द्वारा प्रदान किया गया वर्ष 2009 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; वर्ष 2009 में केरल सरकार से स्वाती पुरस्कार; वर्ष 2002 में केरल संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप; वर्ष 1977 में केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; वर्ष 1996 में श्री स्वाती तिरूनाल संगीत सभा, तिरूवनंतपुरम से गायक रत्नम पुरस्कार; वर्ष 2010 में चेन्नई संगीत अकादमी से टी.टी. के पुरस्कार; वर्ष 2009 में गुरूवायूर देवासम से प्रदान किया गया चेम्बई गुरूवायुरप्पन पुरस्कारम्; वर्ष 2010 में कला सागरम् संगीत सभा, सिकन्दराबाद से संगीत कला सागरम; वर्ष 2007 में तुंजन स्मारक स्मैति, तिरूवनंतपुरम् से संस्कृति पुरस्कार; वर्ष 2008 में गुरू जी श्री काशी विश्वनाथर वेदव्यासर तपोवनम् से श्री वेदव्यास गणमणि आदि हैं।